मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

डा० परस राम अग्रवाल

वर्ष 9	बृहस्पतिवार 10 जून 1982	संख्या 2

Board of trusties of Faqir Library Charitable Trust (Regd.) Manavta Mandir
HOSHIARPUR.

1. Sh. K. M. Pardesi, President
2. Master Mohan Lal, Vice President
3. Sh. Subash Chander Kalia, General Secretary
4. Sh. Harbans Lal, Joint Secretary
5. His Holiness Anand Dayal Ji Maharaj
6. His Holiness Anand Rao ji Maharaj
7. Sh. S. N. Bhardwaj
8. Dr. K. L. Jaura, M. Sc. Ph. D-
9. Sardar Lal Singh
10. Dr. Darshan Singh
11. Sh. Puran Chand.
12. Pt. Narain Dass Dogra
13. Sh. Ram Rakha Chouda

Executive Secretary cum Cashier

Dr. Paras Ram Aggarwal

परम दयाल फ़कीर सत्संग,

अलीगढ़ ।

दिनांक 29-1-81

[गतांक से आगे]

अब तुम सोचो ! जब कर्म का यह हाल है तो हम कर्म क्या करते हैं ? तुम रात को सो ज ते हो तुम को गुस्सा आता है, तुम किसी को मुक्का मारते हो तो तुम्हारा हाथ हिल जाता है, तुम रात को सोये हुए होते हो, कोई डरावनी शक्ल देखते हो, तुम्हारी ज़बान बड़बड़ाती है । औरतों का मुझे पता नहीं तुम आदमी हो अपने ख्याल से ख्याली औरत बना लेते हो, बनाते हो कि नहीं बनाते ! तुम्हारा वीर्य निकल जाता है । जो स्वप्न का ख्याल है वह तुम्हारे वश का नहीं, जब जो चीज़ तुम्हारे वश में

नहीं है उसके ख्याल का असर तुम्हारे जिस्म पर पड़ता है तो जागते हुए जो हम एक दूसरे से दुश्मनी करते हैं, घेराव करते है, ये हड़तालें करते हैं, बसें जलाते हैं इन के असर से बच कर तुम जाओगे कहां ? और मैं यह हौसले से कहना चाहता हूं कि तबाही शर्तिया आयेगी। लड़ाई हो, घरेलू झगड़े हों, अकाल पड़े, कुछ हो इस वक्त जो कुछ मौजूदा Politics है, हर जगह घृणा है और द्वेष है तो इस कर्म के परिणाम से तुम जाओगे कहां ? इसीलिए मन, वचन, कर्म से शुद्ध रहने की तालीम है। कबीर साहिब का शब्द है :—

करम गति टारे नाहिं टरी।
मुनि वसिष्ठ से पंडित ज्ञानी, सोध के लगन धरी।
सीता हरन मरन दसरथ को, बन में विपति परी ॥१॥
कहँ वह फंद कहँ वह पारधि, कहँ वह मिरग चरी।
सीता को हर ले गया रावन, सोने की लंक जरी ॥२॥
नीच हाथ हरिचन्द बिकाने, बलि पाताल धरी।
कोटि गाय नित पुन्य करत नृग, गिरगिट जोनि परी ॥३॥
पांडव जिन के आपु सारथी, तिन पर बिपति परी।
दुर्योधन को गरब घटायो, जदुकुल नास करी ॥४॥

राहु, केतु औ भानु, चन्द्रमा, विधि संजोग परी।
कहत कबीर सुनो भई साधो, होनी हो के रही ॥५॥

जो कुछ इस वक्त मुल्क में हो रहा है, क्या कुछ नहीं हुआ देखते नहीं हो, अलीगढ़ में क्या हुआ, मुरादाबाद में क्या हुआ, पाकिस्तान में क्या हो रहा है, यह क्या है? इसी वास्ते इस कलियुग में जो फ़कीर या सन्त आते हैं वे किसी मज़हब के चलाने वाले नहीं होते उनका मज़हब सब के लिए एक होता है। न उनकी नज़र में कोई हिन्दू है; न मुसलमान है, न सिख है, न ईसाई है, इनकी तालीम सब के लिए यकसाँ होती है। मैं चूंकि इस वक्त संसार में प्रकट हुआ हूं अपने आप को कहता हूं कि मैं सन्त सत्तगुरु बक्त हूं तो अपनी आत्मा से पूछता हूं बेहया! तू बकता है। मैं बकता नहीं मैं सच कहता हूं, जो कुछ मैंने Realize किया है वह बिलकुल ठीक निकला, इस लिए मैं अपने तजुर्बे के आधार पर कहे जाता हूं कि ऐ इन्सान! अपनी नीयत को साफ रख, बस अगर कोई ईमान है तो सिर्फ एक कि अपनी ज़ाती ग़रज़ के लिए किसी के साथ हरा-

फेरी, धोखा-फ़रेब, चार सौ बीस मत कर, सब कर्म का फल है। हिन्दू कहते हैं इसका पाप लगता है। मैं कहता हूं एक आदमी किसी आदमी की चोरी करता है तो उसको एक पाप, हम लोग जो सरकारी बसें जलाते हैं यह साठ करोड़ की जायदाद है, साठ करोड़ पाप एक आदमी को लगेगा, हम सब को उसका पाप भुगतना पड़ेगा, बच नहीं सकते, कर्म की फिलासफी ऐसी है लाख तुम कोशिश करो। कोई मज़हब कोई पन्थ, कोई गुरु यह बात नहीं बताता, सब कहते हैं नाम, नाम, नाम, नाम ले जाओ जी, गुरु अन्त समय तुमको स्वर्ग में पहूंचा देगा। मुसलमान कहते हैं मुहम्मद साहिब आख़िरी उम्मत को ले जायेंगे, ईसाई कहते हैं जेसस क्राइस्ट ले जायेगा। अरे, कौन ले जायेगा! मैं ज़िन्दा बैठा हुआ आपको कहता हूं लोग मरते हैं मेरा रूप जाता है। कोई कहता है पालको ले के गया, कोई कहता है हवाई जहाज ले के गया, कोई कहता है कि घोड़ा ले के गया। जब मैं ज़िन्दा नहीं जाता मैं कैसे मानूं मरा हुआ कोई आ के ले गया! ये सब दुनिया में एक झूठे

दिलासे और झूठो आस में बंधे हुए हैं।

करम जो जो करेगा तू अन्त में भोगना पड़ना।

लोग कहते हैं और मैं भी कहता हूं कि गुरु ले जायगा परन्तु गुरु नाम है ज्ञान का। जिस किस्म का संस्कार या ख्याल इन्सान के दिमाग़ पर पड़ा हुआ होता है वे शक्लें उसके सामने आती हैं इसको मैं मानता हूं परन्तु ऐसी जगह भी हैं जहां अरबों रुपया लोगों ने डेरे में दिया क्योंकि हम गुरुओं ने यह ख्याल दिया कि अन्त समय गुरु आता है, रूह को ले जाता है यह सरासर झूठ है। मेरे सामने सब गुरुओं ने माना कि वे नहीं जाते, यह केवल हम गृहस्थियों को लूटा गया है। मैं गृहस्थियों के लिए दर्दे-दिल ले के उठा हूं, अपने जैसे बेवकूफ को समझाने के लिए कि अज्ञान में आ के मत लुटो, मत पैसा दो। दुःखियों की मदद करो यह ठीक है, सब से पहले अपने घर वालों की मदद करो जो तुम्हारे रिश्तेदार हैं। गुरु ने तुमको केवल ज्ञान देना है। गुरु ज्ञान की तो कीमत ही कोई नहीं।

गुरु ज्ञान जो पाइये सीस दक्षिणा दे,
लोभी सीस न दे सके नाम गुरु का ले।

समझते हो मेजर साहिब ! मैंने क्या कहा ? मैं इस संसार में आया ही इसीलिए हूं, क़ुदरत ने मुझे पैदा ही इस लिए किया है कि मज़हब को साफ कर जाऊँ। जब तबाही आ जायेगी फिर भविष्य में आने वाली दुनिया के आदमी सोचेंगे कि हमें क्या करना चाहिए, अभी तक तो कोई सुनता नहीं है। यही बात जो मैं कहता हूं दाता दयाल कर्म के बारे में कहते थे, जो बात मैंने डंडे मार के कह दी दाता दयाल ने भी यही बात इशारे में कह दी। हम लोग कड़वे वचन बोलते हैं, दूसरे का दिल दुःखाते हैं। वहू सास का दिल दुःखाती है, सास बहू का दिल दुःखाती है, मर्द औरत का दिल दुःखाता है, औरत मर्द का दिल दुःखाती है देखते नहीं हो कितने ही घरों में, हर जगह झगड़े हैं। सन्तों का मार्ग क्या है ? जो दाता दयाल ने पद में कहा है, वही मैंने अपने लफ्ज़ों में बयान कर दिया है।

मीठी वाणी बोलो मुख से मन रहे निर्मल शुद्ध शरीर ।टेक।
कड़वा वचन कलीजा बेधे, हिंसा की तलवार।
जिम्या बाँधे क्यों फिरते हो, भाला छुरी कटार।
उर में साले सुनकर सुनने वाले, दुःखी बने दिलगीर ।।
मुंह तो बना भयानक बांबी, निकले बिच्छु साँप।
डस डस खायें घाव करें गाढ़ा, महा समझ यह पाप।
प्राणी कुछ तो सोच समझ मन अपने, दे न पीर बेपीर।
क्यों मुख बना नरक की खानी, दुर्गन्धी अस्थान।
जब बोले तब निकले सड़ाइंध, समझ जो चतुर सुजान।
भाई इस करतब से जाय पड़ेगा, नरक कुंड के तीर ।।

अब मैं सोचता हूं क्या आदमी मरने पर नर्क कुंड में जाता है ? हां ! जाता है, कैसे ? जब तुम सुपने में जाते हो कई दफा तुम्हारे बाज़ू कट जाते हैं, सिर कट जाता है, दरिया में डूबते हो, ऊपर भी उड़ते हो, होता है कि नहीं होता ! इसी तरह जब इन्सान मरने लगता है जो-जो कुछ उसने संकल्प किये हुए हैं अच्छे या बुरे, वे उसके सामने शक्ल बना कर आते हैं। इसका सबूत मैं आपको देता हूं। एक सूबेदार मेजर हज़ारी सिंह देर से मेरा प्रेमी था। मेरा रूप उस के अन्दर तरह-तरह से प्रकट होता था परन्तु उसे जो मैं कहता था उसका

यक़ीन नहीं आता था, वह कहता था कि मैं ही जाता हूं। मैं उसको समझाता था वह मानता नहीं था। फिर उसके साथ एक घटना गुज़री उसके चाचा को गुदा पर फोड़ा था, उसका डाक्टर से अपने घर में ही ऑपरेशन करवाया तो उसका चाचा दो घण्टे बेहोश रहा। जब वह होश में आया तो उसने कहा हज़ारो सिंह ! तूने मेरे पर बड़ा उपकार किया। इसने पूछा क्या उपकार किया ? उसने कहा दो आदमी आये, मुझे हाथ पर रख कर के आसमान पर ले उड़े। वहां बहुत रूहें पड़ी थीं मुझे भी रख दिया। एक काली औरत आई उसके मुंह से आग निकलती थी और बड़ी लम्बी जीभ थी, वह रुहों को खाती जाती थी। मैं डर गया। मैंने उनको बोला, भई ! मुझे एक आदमी से मिला दो। किस से ? हज़ारी सिंह से। हज़ारी सिंह तू आ गया। मैंने तुझको कहा, बाबे को कहो मुझे बचा दे। फिर बाबा आ गया, बाबे ने मुझे पकड़ा और कहा जा अपने घर को, उस औरत को कहा तू इसे नहीं खा सकती। मैंने हज़ारी सिंह को पूछा, तू गया था ? नही, मैंने कहा मैं भी नहीं गया।

कौन गया ? उसके दिल में यह ख्याल था कि हज़ारी सिंह बड़ा भगत आदमी है और बाबा बड़ी करनी वाला है। यह जो उसका जज़्बा था उसके अपने इस जज़्बे ने हज़ारी सिंह को बनाया, उसके जज़्बे ने ही फ़कीर चन्द को बनाया।

मैं तुम लोगों की आँखें खोलना चाहता हूं ताकि तुम ने जो इन मज़हब वालों और पन्थ वालों के झगड़ों में आ कर के अपनी जायदादें दीं और अपने बच्चों के पेट काट-काट कर के जो इनके मन्दिर, मस्जिदें, डेरे और आश्रम बना दिये मैं तुम को बताता हूं कि सच्चाई किसी ने हम को बयान नहीं की। मैं देने को बुरा नहीं समझता, मैंने दिया हुआ है मुझे मिलता है। जो अज्ञान से देता है वह तो तर जायेगा परन्तु जो लेता है वह डूब जायेगा :—

शिष्य को ऐसा चाहिए गुरु को सब कुछ देय।
गुरु को ऐसा चाहिए शिष्य का कुछ न लेय।

इस लिए मैं किसी से कुछ नहीं लेता। रोटी खा जाता हूं, जितने का मैंने खाना खाया है अगर

आपको कहूं आप पैसे ले लो तो आप बुरा मानेंगे इस लिए जब मैं जाऊंगा तो उतने ही पैसे मन्दिर में दे दूंगा। पचास-साठ रु. जितने बनेंगे, जितने का मैं खाना खा के आया हूं उतना मन्दिर में अपने पास से दे दूंगा। आप मेरी बात को समझे मैंने क्या कहा ? यह अनाज जो हम खाते हैं इसका असर पड़ता है। मैं आपको सुनाता हूं कि हम नंगल गये, एक ज़मींदार था उसने मुझे बुलाया था। हम सात आदमी थे। उसने मुझे क्यों बुलाया, वहाँ उसने बात बताई। उसका एक एम. एल. ए. के साथ ज़मीन के झगड़े का मुक़दमा था। इसका कोई सहारा नहीं था, वह कहता था बाबा! हम तो तेरा ध्यान करते थे, तेरा आसरा था, अदालत में गये कहता था मुझे यह मालूम होता था वकील भी आप हैं, जज भी आप हैं, गवाह भी आप हैं। दूसरी तरफ जो एम. एल. ए. था उसी के गवाह ने जो गवाही दी वह मेरे हक़ में आ गई, जज ने मेरे हक़ में फ़ैसला कर दिया। वह जज़बे में आ कर के हम सात आदमियों को ले गया। खाना खिलाया, खीर बनाई हम सात आदमियों ने खूब खाई। नंगल दिखाया, तीन-तीन

रुपये दिखाने का किराया दिया, इक्कीस रुपये उसने यूं भरे। मैं शाम को आया, यह गोपालदास मेरे साथ था, गर्मी का मौसम था, मैं लेटा, महाराज मन मेरा मारे छालें, कभी कुछ सोचे, कभी कुछ सोचे, मैं तंग आ गया। मैंने गोपालदास को बोला भई गोपालदास! हुक्का डाल दे, आज तो मन बहुत तंग करता है। फिर मैंने सोचा कि मन क्यों तंग करता है? फिर मुझे ख्याल आया ओहो! तूने उसकी बात को सुन के उस को यह नहीं कहा कि तू उसको बचाने के लिए नहीं गया, जो तूने नाहक़ का अन्न खाया उस वास्ते तेरा मन तंग करता है। मैंने नौकर को बोला जोगेन्द्र! दस रुपये मेरे हिसाब से निकाल कर के मन्दिर के लिए अलहदा रख दे, उसने जो मैंने अन्न खाया था उसके दस रुपये मन्दिर के लिए अलग रख दिये, मेरा मन शान्त हो गया।

एक आदमी ने मुझे पूछा मन की चंचलताई को रोकने की बात बताओ। जिस शख्स की खुराक ठीक नहीं, जिस की हक-हलाल की कमाई नहीं, जो रजोगुणी और तम गुणी खुराक खाता है उसका

तो फलक भी मन को क़ाबू नहीं कर सकता। आज मुझसे किसी ने यह सवाल पूछा था उसको मैंने कहा था कि सत्संग सुनना। हमारा मन खुराक से बनता है, जिस किस्म की हमारी कमाई है उसका असर पड़ता है। जब से मैं नौकर हो गया मैंने आज दिन तक बाप की कमाई और बाप के घर की रोटी नहीं खाई क्योंकि वह पुलिस में थे। एक बार मैं घर में गया उन्होंने कहा रोटी खा ले परन्तु मैंने ढाबे पर रोटी खाई, उनको पता लगा तो मेरे पास लड़ने के लिए आ गये। मैंने कहा पिता जी ! आप पुलिस में हैं, रिश्वत खाते हैं इस लिए मैंने आपके घर का खाना नहीं खाया। अब मैं सोचता हूं मैं बेवक़ूफ था परन्तु मैंने सच्चाई से कहा। अब भी मैं अपने आपको बड़े परहेज़ के साथ रखता हूं, जहां तक हो सकता है अपने आप को बचाता हूं। हाँ ! एक शख्स समझदार है, ज्ञानी है वह मुझे देता है तो कोई पाप नहीं दुःख के समय में मुझे जरूरत पड़ी तुमने मेरी मदद कर दी, तुम्हें ज़रूरत पड़ी मैंने तुम्हारी मदद कर दी यह तो लेना-देना है न ! परन्तु इस ख्याल से मैं नहीं लेता कि मेरा रूप तुम्हारे अन्दर

प्रकट हुआ, इस लिए गुरु समझ कर तुम मुझे देते हो, मैं इसके विरुद्ध हूं। तो मन की चंचलता क्यों आ.ती है ? एक तो यह कि हमारा विषय-विकार का जीवन होता है, जिन शख्सों ने विषय-विकार ज्यादा कमाया हुआ है उनके मन चंचल रहेंगे, लाख कोई गुरु भावें खुदा भी आ जाय उसको शान्ति कैसे देगा ! दूसरे जिसकी हक़-हलाल की कमाई नहीं है, जिसकी खुराक ठीक नहीं है उसके मन को शान्ति नहीं मिलेगी।

मेरे ज़ाती तजुर्बे हैं दोस्तो, जब दाता दयाल गुज़र गये तो मैं धाम गया। जब वापिस आया तो देहली में ठहरा। वहां बड़े पोस्ट मास्टर ने मुझे बुलाया, उसने कहा महाराज ! आप बुरा न मानना मैंने दाता दयाल की इतनी सेवा की, यह किया, वह किया मेरा लड़का मर गया, मेरे अन्दर अभ्यास नहीं खुला, यह नहीं हुआ वह नहीं हुआ। मैं सुनता रहा, मैंने कहा जब दूसरी बार आऊंगा तब तुमको ज़वाब दूंगा। जब फिर आया तो मैं उसके घर गया। वह खाना खा रहा था मैंने कहा, तेरा मन कैसे क़ाबू आये, यह फलाँ चीज़ है इसकी यह

तासीर है। इस वास्ते जो अभ्यासी हैं उनको सतोगुणी चीज़ खानी चाहिए। हमारे यहां ब्राह्मण लोग लहसुन और प्याज नहीं खाते थे। क्यों नहीं खाते थे? क्योंकि इससे रजोगुणी प्रभाव पड़ता है। समझ गये मेरी बात को? तो किसी शख्स ने मुझसे सबाल किया था कि मन को क़ाबू करने का क्या इलाज़ है? उसको ज़वाब दे रहा हूं कि मन क़ाबू जल्दी नहीं आता, इसके लिए तरीक़े होते हैं हक़-हलाल की कमाई, ज्यादा विषय न कमाना, ख़ुराक का परहेज़ रखना इत्यादि। तो आज मैंने आप को कोई क़सर छोड़ी नहीं, हर पहलू के ऊपर मैंने गृहस्थ के लिए भी, घरेलू ज़िन्दगी के के लिए भी और पारमार्थिक ज़िन्दगी के लिए भी सब कुछ बता दिया। मेरे ख्याल में जो कुछ मैंने कहा है इसको ही पचा सको तो इतना ही बहुत है।

नोट :— हो सकता है जो कुछ मैंने कहा हो सारे का सारा ग़लत हो, यह दावा नहीं कर सकता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही Final है। मेरी ज़िन्दगी का यह अपना निजी तजुर्बा है, मैं किताबी

इल्म नहीं जानता, न ही गीता के या और किताबों के हवाले देता हूं, मैंने जो Observe किया व कहता हूं। अगर तुम समझते हो कि मैंने ग़लत कहा है तो मेरी बात को मत मानो, आप समझते हैं मैं ग़लती पर हूं तो मेरे पास मत आया करो, मेरी किताब न पढ़ा करो, बस खत्म हो गया काम। अगर स्वामी दयानन्द को सत्यार्थप्रकाश लिखने का हक़ था, मुहम्मद साहिब को कुरान शरीफ़ लिखने का हक़ था, दाता दयाल को छः हजार किताबें लिखने का हक़ था और राधास्वामी मत वालों को सार वचन लिखने का हक़ था तो मुझे भी हक़ है। भई! मैंने 95 साल गुज़ारे मेरी समझ में क्या आया? सत्संग सुनने की एक आदत है, हर जगह सत्संग होते हैं, लोग पागल हो जाते हैं और सत्संग कराने वाले को भी सत्संग कराने की एक आदत है जिनमें से मैं एक हूं। कई बार सोचता हूं इसका कुछ फ़ायदा? मैं तो अपना कर्म भोगता हूं। फ़ायदा नहीं होता। क्यों? स्वामी जी की वाणी है :—

सत्संग करत बहुत दिन बीते, अब तो छोड़ पुरानी बान।
कब लग करो कुटिलता गुरु से, अब तो गुरु को लो पहचान।
गुरु को मानुष मत जानो वह हैं सत्तपुरुष की जान।

कबीर साहिब ने भी कहा है :—

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिये अन्ध।
दुःखी होयं संसार में आगे जम का फन्द।।
गुरु किया है देह सत्तगुरु चीन्हा नायं।
कहें कबीर ता दास को तीन लोक भरमायं।।

सुखमनि साहिब में गुरु अर्जुनदेव की वाणी है :—

सत्तपुरुष जिन विवेकिया सत्तगुरु तिसका नाम।
ताके संग शिष्य उभरे नानक हरि गुन गान।।

वो कहते हैं जिसने सत्तपुरुष को जान लिया है उसकी संगत व सेवा करो। फिर आगे कहते हैं कि सत्तपुरुष क्या है :—

जिभ्या एक अस्तुत अनेक सत्तपुरुष है पूरण विवेक।

तो फिर सत्संग से क्या मिलता है ? विवेक,

समझ और ज्ञान मिलता है। जो उसको हासिल नहीं करता, स्वामी जी कहते हैं :—

सभी आये सत्त गुरु आगे दरस न पकड़ा वचन न लागे।
कहो उस सत्संग से क्या फल पाया वक्त गया और जन्म गंवाया।

मैं अपनी ड्यूटी पूरी कर जाना चाहता हूं। सुवह मैंने बहुत कुछ कह दिया। बात को समझो और उस पर अमल करो तब तो कल्याण है नहीं तो सत्संग में आते रहते हैं, लंगर में रोटियाँ पकती रहती हैं। कोई जगह ऐसी है जहाँ सत्संग नहीं होता? कहीं गीता का सत्संग है, कहीं रामायण का सत्संग हैं, कितनेक आदमियों की जिन्दगी सुधर गई?

—o-☺-o—

सत्संग हजूर परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज,

3 पारसी नगर, जवाहर नगर, श्रीनगर

दिनांक 17-5-81

मैं यहाँ क्यों आया ? स्वामी गोबिन्द कौल मेरे गुरुभाई थे। हम दोनों ने एक ही मां का दूध पिया हुआ है। आज आठ, दस वर्ष हो गये पहले-पहले उन्होंने ही मुझे यहां बुलाया था। दाता दयाल ने मुझे कहा था फ़कीर ! चोला छोडने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैंने कोई नई शिक्षा नहीं बदली। मैं जो कुछ कहता हूं कि भई, तुम अपने मन को काबू करो, यह करो, वह करो, वही कुछ दाता दयाल कह गये हैं। आज आपको दाता दयाल का एक शब्द सुनाता हूं।

मीठी बानी बोलिये मुख से, मन रहे निरमल शुद्ध शरीर।
कड़वा वचन कलीजा बेधे, हिंसा की तलवार।

जिभ्या बाँधे क्यों फिरते हो, भाला छुरी कटार।
उर में साले सुनकर सुनने वाले, दुःखी बने दिलगीर।

हम मीठी वाणी क्यों बोलें ? एक व्यक्ति ग़लती करता है, हम उसको गाली निकालते हैं और बुरा-भला कहते हैं। प्रश्न है कि हम क्यों न कहें ? मैं आपको दो-चार सत्संगों में बताता चला आ रहा हूं कि मानव के ख्याल में बड़ी भारी शक्ति है। हम मुख से जो कुछ कहते हैं, जिस भाव से कहते हैं, उस भाव का प्रभाव हमारी ज़बान के रास्ते से दूसरे के दिल पर होता है। प्रश्न जितना है यंह सब कहने वाले के भाव पर निर्भर है। यूं तुम किसी को मां बहिन की गाली निकालो वह तुम्हारे गले पड़ जायेगा परन्तु दूल्हा ससुराल में जाता है वहां की लड़कियां मज़ाक करती हैं अरे! अपनी दादी लेकर नहीं आया हमारा बूढ़ा खाली बैठा है, ऐसी बातें कहती हैं कि नहीं कहती ? उसको तो कोई बुरा नहीं मानता परन्तु यूं तुम किसी को कहो तो वह बुरा मानता है। समझते हो मेरी बात को ?

मैं और ढंग से कहता हूं, दाता दयाल ने वही शब्दों में लिख दिया। मैं जो कुछ कहता हूं मेरा

अपना कुछ नहीं, यह तो मुझे संस्कार या इन्जैक्शन दाता दयाल द्वारा दिया हुआ है। किसी समय आदमी ताना मारता है। तुम देखो ! दिल्ली में जब पाण्डवों का राज्य था तो पाण्डवों ने एक महल बनाया था जिसमें ऐसा फ़र्श था कि मालूम होता था कि पानी है। जब दुर्योधन इत्यादि गये, इन्होंने समझा कि पानी है तो इन्होंने जूते उतार लिये । द्रौपदी ऊपर बैठी हुई थी। उसने क्या कहा ? अन्धों की सन्तान अन्धी होती है। कहा कि नहीं कहा ? वह वचन दुर्योधन को खा गया और उसने उसका बदला लिया। द्रौपदी को भरी सभा में नंगी करने का प्रयत्न किया तथा जूए में सब कुछ जीत लिया। तुम व हम घरों में क्या करते हैं ? सोचो ! ताने मारते हो कि नहीं मारते ? वह बड़ा ताना था यह छोटा है । छोटी-2 बातों को हम निरर्थक समझते हैं परन्तु कई बातें अपना प्रभाव रखती हैं इस लिए किसी को ताना नहीं देना चाहिए :—

मुंह तो बना भयानक बांवी, निकले विच्छू साँप ।
डस डस खायें घाव करें गाढ़ा महा समझ यह पाप ।
प्राणो कुछ तो सोच समझ मन अपने दे न पीर बेपीर ।

इसको कहते हैं 'अहिंसा परमो धर्मः' अर्थात् किसी की हानि न करो, किसी का मन मत दुःखाओ। मैं कहता हूं ऐ इन्सान ! सबसे पहली हिंसा यह है कि ऐसा विचार मत सोचो, ऐसी बात मत करो जिससे तुम्हारा अपना मन दुःखी हो, यह है असली अहिंसा। लोगों का मन दुःखाने की बात छोड़ो, ऐसा ख्याल, ऐसे विचार मत लो जिससे तुम आप दुःखी हो। मेरी शिक्षा क्रियात्मक जीवन की है। तुम लाख गीता या रामायण का पाठ पढ़ते रहो, भजन गाते रहो या घण्टा भर ग्रन्थ साहिब का पाठ करते हो यदि तुम्हारी रहनी व अमल ठीक नहीं है तो उन भजनों से तुम को एक आनन्द मिल जायेगा परन्तु कोई विशेष लाभ नहीं होगा।

हम अपने मन, वचन व कर्म से दूसरों को सताते व दुःखी करते रहते हैं उसका परिणाम क्या निकलता है ? घरों में देखो जितने झगड़े हैं ताने मारने के होते हैं। हीर, रांझे का किस्सा आपने सुना होगा। रांझा अपने घर पर था, कोई बात हुई तो भाभी ने ताना मारा कि भई ! अगर तुम

बहुत ही अच्छी चीज़ चाहते हो तो हीर को व्याह लाओ। अब देखो! उसके एक ताने ने रांझे को कितना खराब किया। आप लोग आये हैं मैं जो कहता हूं इसका प्रमाण दाता दयाल की ज़बानी दे रहा हूं न कि मैं कोई नई चीज़ अपने घर से लाया हू :—

प्राणी कुछ तो सोच समझ मन अपने, दे न पीर बेपीर।

ऐ मानव! किसी के मन को मत दुखा। आप लोग घरों में क्या करते हैं, बताओ? औरतें एक दूसरे को ताना मारती हैं, एक दूसरे की शिकायत करती हैं। जिसका यह नियम ठीक नहीं है वो सिर पटक कर मर जाये, लाख अभ्यास करता फिरे उसका मन पवित्र नहीं होगा और जब तक मन पवित्र नहीं होगा, सुरत आगे नहीं चढ़ेगी। यह भेद है जो मैं आपको बता रहा हूं :—

क्यों मुख बना नरक की खानी, दुर्गन्धी अस्थान।
जब बोले तब निकले सड़ाइंध, समझ जो चतुर सुजान।
भाई इस करतब से जाय पड़ेगा, नरक कुंड के तीर॥

मीठी वाणी बोलो, प्रेम व आदर से बोलो। आप देखिए हमारे शास्त्र क्या शिक्षा देते हैं परन्तु क्या कोई इसे मानता है ? हमारी ओर जब शादी होती है तो अब तो लड़का, लड़की एक दूसरे को जानते भी हैं परन्तु पिछले समय में तो यह बात नहीं थी, माँ-बाप ने जहां शादी कर दी, कर दी। फेरों के बाद पर्दा करके लड़की को लड़के का तथा लड़के को लड़की का मुंह दिखा देते थे तथा लड़के को कहते थे एक बार पत्नी का नाम ले लो, लड़की को कहते कि एक बार पति का नाम ले ले फिर न लेना। क्यों ? ताकि उनमें अदब रहे। हमारे यहां, आज-कल तो खैर समय बदल गया, पत्नी को नाम से नहीं पुकारते थे, अमुक की माँ तथा अमुक की पत्नी कहते थे। क्यों भई ? ताकि इनके अन्दर इज्ज़त का माद्दा रहे। जहां अदब नहीं है वहाँ कुछ भी नहीं है।

देखो ! मैं आपको गुर बताये जाता हूं। दाता दयाल ने 'नैय्यर-ए-आज़म' किताब में लिखा है' बा अदब हो, बा अदब हो, बा अदब हो' जिस जगह अदब नहीं

है वहां कुछ भी नहीं है। आजकल क्या होता है ? औरतें घर में आती हैं, पति, पत्नी को चुड़ैल कहता है, सास बहू को कहती है कि जब से तू आई है मेरा घर बर्बाद हो गया। कहते हैं कि नहीं कहते ! घरों में ये झगड़े होते हैं कि नहीं होते ! इसका क्या परिणाम निकलता है ? मानव का मन अशान्त रहता है और वह इस संसार में दुःखी रहता है। घर में शान्ति ही नहीं रहती ! इस लिए अदब का विषय है, हमारे ऋषि इसी बात पर ज़ोर देते हैं। मैंने आपको उदाहरण दे दिया कि पत्नी का नाम नहीं लेते थे। पत्नी का इतना आदर है कि कृष्णराधा कोई नहीं कहता बल्कि राधाकृष्ण, सीताराम कहते हैं अर्थात् पहले स्त्री का नाम आता है बाद में पुरुष का नाम आता है परन्तु तुम लोग आजकल अपनी औरतों के साथ क्या व्यवहार करते हो, सोचो ! जिस मकान की नींव नहीं है उसके ऊपर मकान बनाओगे, गिर जायेगा। ये जो छोटी-2 बातें हैं ये जीवन को घड़त की आधारशिला हैं आधार-शिला। मेरा लड़का है मैं जब कभी उसे बुलाता हूं म जी कह कर बुलाता हूं, ओये पदम कर के

कभी नहीं कहा, मैंने अपने बच्चों को ख्याल ही ऐसा दिया। सदैव जब लड़के को पत्र लिखता हूं तो 'Padam the Great' यह ख्याल देता हूं। जब उसकी सगाई हुई तो मैंने लड़को के बाप को 'I Congratulate you for matrimonial alliance between my Son Padam the Great with Sarla the Lucky" और वह Lucky (सौभाग्यवती) हो गई। मेरी पोती रानो पैदा हुई, मैंने कहा 'Rano the Noble' वही सारे गुण उसमें मौजूद हैं। पोता पैदा हुआ मैंने कहा 'Bikram the Brave' दूसरी लड़की पैदा हुई 'Agma the wiser' अर्थात् अपने बच्चों को सदैव अच्छा विचार दो। बच्चे का मन कोमल होता है, हर समय बच्चे को नालायक कहना, तू किसी काम का नहीं है, तुझ में यह नुक्स है तुझ में वह नुक्स है, वह तुम्हारा विचार उस पर असर कर जायेगा।

मैं आप लोगों को जीवन गुज़ारने का रास्ता बता रहा हूं कि क्रियात्मक जीवन क्या होता है कि

जिस के करने से हमारा जीवन सुख और शान्ति से गुज़र जाता है।

क्यों मुख बना नरक की खानी, दुर्गन्धी अस्थान।
जब बोले तब निकले सड़ाइंध, समझ जो चतुर सुजान।
भाई इस करतब से जाय पड़ेगा, नरक कुंड के तीर।

मैं किताबी ज्ञान नहीं बताता, अपनी आत्मा से प्रश्न करता हूं क्या यह ठीक है कि गन्दे ख्याल रखने वाला नर्क में जाता है ? आपको एक उदाहरण सुनाता हूं—एक सूबेदार मेजर हज़ारी सिंह है। जब वह सिपाही था उस समय से मेरे पास आता था। उसके साथ बड़े-२ चमत्कार हुए। मेरे रूप ने उसको बहुत सहायता की। जब वह क्वार्ट मास्टर (स्टोर का मालिक) था तो किसी चीज़ के गुम होने का विचार था इस लिए उसका कोर्ट मार्शल हो गया। उसने मुझे याद किया तो मैंने उसको कहा तुम को कुछ नहीं होगा। कोर्ट मार्शल करने वाला जो मेजर था उसको वो कहता है तुम मेरा क्या कर सकते हो, मेरे बाबा ने कहा है कि तुम मेरा कुछ नहीं कर सकते। मेजर ने समझा यह पागल हो गया है। जब कोर्ट

मार्शल हुआ तो जो लिखित प्रमाण था, जिसके आधार पर कोर्ट मार्शल होना था वह प्रमाण ही गुम हो गया, उसका इतना विश्वास था। उसने अमृतसर में मुझे एक बात बताई। उसके चाचे को गुदा में फोड़ा था, डाक्टर को बुलाया उसने घर में ही उसका ऑपरेशन कर दिया। ऑपरेशन के बाद उसका चाचा दो घण्टे बेहोश रहा। दो घण्टे बाद वह उठा तो उसने कहा हजारी सिंह! तूने मेरे साथ बड़ा उपकार किया। क्या उपकार किया? उसने कहा दो व्यक्ति आये वे मुझे अपने हाथ पर रखकर आसमान में उड़ गये। वहाँ मुझे एक ऐसी जगह रखा जहाँ बहुत सी आत्माएँ पड़ी थीं। एक काले रंग की औरत, उसकी लम्बी ज़बान, उसके मुंह से आग निकलती थी, वह उन आत्माओं को खाती जाती थी। मैं डरा। मैंने उन व्यक्तियों को जो मुझे लाये थे कहा, भई! इसने मुझे खा तो जाना ही है, एक आदमी को मिला दो। उसने कहा किसको? हज़ारी सिंह को। हज़ारी सिंह! तू आ गया। मैंने तुम्हें कहा कि बाबे को कहो कि मुझे बचा ले। हज़ारी सिंह तो चला गया, बाबा फ़कीर आ

गया। बाबा फकीर ने मुझे उठाया और कहा कि जा अपने घर को तथा उसे कहा कि तू इसे नहीं खा सकती। अब देखो ! मैं तो गया नहीं, मुझे पता नहीं उसके अन्तर मैं कैसे प्रकट हुआ, हज़ारी सिंह कैसे प्रकट हुआ ? क्योंकि हज़ारी सिंह भक्त था, मेरा विश्वासी था। वह जानता था कि यह भक्त है, यह मेरी सहायता करेगा इस लिए उसने हज़ारी सिंह को याद किया। उसने ख्याल ने हज़ारी सिंह को प्रकट कर दिया और चूंकि उसका ख्याल था उसने बाबे को कहा, उसके अपने ही ख्याल ने फ़कीर चन्द को प्रकट कर दिया। चूंकि उसको अच्छी संगति मिली हुई थी, उसके ख्याल के कारण हज़ारी सिंह भी आ गया तथा मैं भी आ गया। वह नर्क कुण्ड में क्यों गया ? जो उसने गन्दे ख्यालात व विचार किये हुए थे वे उसके सामने औरत या आत्माएँ बन कर आये वरना न वास्तव में वहां कोई स्त्री थी न वहां आत्माएँ थीं, वह उसका अपने ही मन का ख्याल था। जो व्यक्ति गन्दे ख्यालात रखता है उसको क्या होता है ? जब वह स्वप्न में जाता है या मरता है तो उसके सामने भयानक शक्लें आ

जायेंगी और जो नेक विचार रखता है उसके सामने गुरु आ जायेगा, देवता आ जायेंगे या अच्छे ख्यालात आ जायेंगे। क्या कहा मैंने !

यदि आप सचमुच अपना जीवन अच्छा बनाना चाहते हैं तो आप लोग मेरे जैसे के सत्संग को अपना बडा सौभाग्य समझो। जब मानव मरने लगता है तो उसके सामने फिल्म चलती है, जैसे-2 उसके मस्तिष्क में ख्यालात होते हैं वे उसके सामने आते हैं। मैंने आपको अपना हाल सुनाया, मुझे स्वयं पता नहीं कि मेरा क्या परिणाम हो। क्यों ? मुझको कभी मन्दिर स्वप्न में नहीं आया। मैं विदेश जाता हूं कोई स्वप्न में नहीं आता परन्तु तार विभाग, रेलगाड़ी, मेरा बाप, मेरी माँ, मेरी स्त्री या मेरे ताये का लड़का जिसको मैंने छोटी आयु से प्यार किया वे स्वप्न में आते हैं। वो जो संस्कार हमारे मन पर पड़ा हुआ है वह संस्कार फुरता है। भ्रूमध्य वह स्थान है जिसके ऊपर जो कुछ हम देखते हैं, सुनते हैं उसकी फिल्में बन जाती हैं। जब हम आँख बन्द करते हैं या स्वप्न में चले जाते हैं वही फिल्में तरह-2 की शक्लें बना-2 कर हमारे सामने आती हैं :—

जब बोले तब मीठी बानी, बानी अधिक स्वाद।
उत्तम पुरुष की यह है रीती, राख धर्म मरयाद।
पहनो सँवर सिंगार के तन पर, शील भाव की चीर।

यह सन्तमत की शिक्षा है। सन्तमत की ही नहीं यही सनातन धर्म की भी शिक्षा है, 'शिव संकल्पमस्तु'। आप देखो! आजकल हम स्त्रियों की निन्दा करते हैं, किसी को कुछ कहते हैं परन्तु हमारे शास्त्र क्या कहते हैं? लड़की होती थी उसको कहते थे उमा है, शादी हो गई तो कहते थे लक्ष्मी है, बूढ़ी हो गई माता है, मेरी बात को सोचो! परन्तु हम क्या करते हैं, स्त्रियों के लिए पति का दर्जा कैसा होता था? वे अब कैसी ज़बानें बोलती हैं! किसी को क्या कहूं क्योंकि मैं ईमानदार था तथा ग़रीबी काटी, मेरी स्त्री मुझे कहा करती थी जब से मेरी शादी हुई है सिवाय दवाइयाँ देने के या कुछ करने के तूने क्या किया? मैं यह सत्संग कराता हूं। मेरी 95 वर्ष की आयु है। तुम लोग प्रातः से मुझे घेरते हो, मस्तिष्क भी थक जाता है परन्तु मैं चाहता हूं कि अपनी duty पूरी

कर जाऊं। आप मेरी बात को सुनें, अमल करें या न करें मुझे इससे क्या गरज़। मेरे ज़िम्मे तो एक dnty थी :—

पहनो सँवर सिंगार के तन पर, शील भाव की चीर।

चीर का अर्थ यहां शान्ति से है। अर्थात् अपने घरों में शान्ति रखो तुम्हारा घर स्वर्ग हो जायेगा। जब तुम्हारा घर स्वर्ग हो जायेगा, लक्ष्मी तुम्हारे घर में आयेगी, किसी बात की कमी नहीं रहेंगी। जिस घर में कलह है, आपस में Cold war है, वहां आज भी सुख नहीं है और कल भी सुख नहीं है :—

आया जब राधास्वामी मत में, निंदा कुवानी त्याग।
गाता रह आनन्द हरष से, शब्द का मंगल राग।
ऐसा पुरुष विवेकी कहलाता है,पंथ का साध फकीर॥

यह है, दाता दयाल जी महाराज की शिक्षा। तुम स्वामी गोबिन्द कौल जी से सम्बन्ध रखते हो, वह दाता दयाल जी महाराज के शिष्य थे, मैं भी उनका शिष्य रहा। जो दाता दयाल जी महाराज

को शिक्षा का संस्कार है मैं आपको वही बता रहा हूं ताकि आप यह न कहें कि मैं कोई नई चीज़ अपने घर से लाया हूं। दाता दयाल जी महाराज का एक और शब्द है :—

ए मेरे प्यारे भाई, देखो संभल कर चलना।
खोटे करम न करना, खोटी न बात कहना।
दुःख दोगे दुःख मिलेगा, सुख दोगे सुख मिलेगा।
मारोगे जब किसो को फिर गम पड़ेगा सहना।

यह बिलकुल ठीक है कि कर्म का फल मिले बगैर कभी रहता नहीं। एक अंग्रेज को फाँसी की सज़ा मिल गई। जब आखिरी वक्त आता है तो अंग्रेजों में पोप जाता है ताकि जो कुछ किसी ने गुनाह किये हुए हैं वो उनके बोझ को हल्का करा दे। पादरी गया तो मुजरिम ने कहा कि भई, बात यह है कि इस केस में तो मैं बिलकुल निर्दोष हूं, मैंने मारा नहीं परन्तु मुझे जो सज़ा मिली है वह इस लिए मिली है कि कुछ सालों पहले मैंने किसी आदमी को मारा था और उस वक्त मैं पकड़ा नहीं गया, उसकी सज़ा मुझको यह अब मिली। मेरो बात को याद

रखना कि हमारे साथ जो कुछ होता है वह कोई अन्याय नहीं होता। हम समझते हैं हमको हमारा बाप तंग करता है या फलाँ आदमी तंग करता है वास्तव में वह हमको हमारे कर्मों का फल मिलता है। जैसे कि परसों मैंने आपको दाता दयाल का एक शब्द सुनाया था, जिसमें लिखा था :—

कोई सुख दुःख का नहीं दाता तेरी यह भूल सब,
करम अपने करते हैं अनुकूल और प्रतिकूल सब।

हर शख्स को चाहें वह सन्त है, महात्मा है, पीर है, पैग़म्बर है या राम, कृष्ण या अवतार है सबको अपने-अपने कर्म का फल मिलता है, कोई बच नहीं सकता :—

क़ौल ओ ख्याल व करतव दरिया से है मुशाहबा,
तुम देखना न इनकी लहरों में पड़ के बहना।

क़ौल और ख्याल, क़ौल कहते हैं बात को, ख्याल कहते हैं जो हमारे अन्दर में विचार होते हैं। मैं यही कहा करता हूं न कि ख्याल का असर होता

है, यही दाता कहते हैं। क़ौल और ख्याल दरिया की तरह वहते रहते हैं और ये दूसरों पर तथा अपने पर भी असर करते हैं। वो कहते हैं अपने ग़लत ख्यालात में मत वह जाओ और अपनी ज़बान को अपने क़ाबू में रखो :—

मन इन्द्रियों पर भाई ज़ब्त रखना तुम बराबर,
जीवित बने रहोगे खुशहाल हो के रहना।

यही गीता कहती है, तर्ज़-ए-ब्यान का अन्तर है और कुछ भी नहीं। मैंने आपको बताया कि ख्याल में बड़ी भारी ताकत है, लोग अपने प्रेम व अपने विश्वास से मुझे याद करते हैं, मेरा रूप प्रकट हो जाता है तथा उनके काम कर जाता है और मेरे बाप को कुछ पता नहीं होता। यही एक भेद था जिसको इन मज़हब और पन्थ वालों ने छुपाया। परिणाम ? इन्सानी नसल बंट गई। कबीर साहिब ने भी इस भेद को नहीं खोला। क्यों नहीं खोला ? वह कहते हैं :—

साँच कहूँ तो मारसी, यह तुरकानी जोर।
बात कहूँ परलोक की, कर गह बाँधे चोर।।

क्योंकि उस समय तुर्कों का राज्य था अब भी वह रेडियो का डायरैक्टर आया था, मैंने कुछ सच्चाई

कही, उसने कहा मैं यह रेडियो पर नहीं बोल सकता हकूमत से सब डरते हैं। ऐसे ही स्वामी जी, बाबा सावन सिंह जी तथा दाता दयाल जो ये अंग्रेजों के राज्य में आये । उनकी Policy थी Devide and rule, परन्तु सन्त unite करते हैं । Santmat has come on this earth to unite humanity & the religion. अब अपना राज्य है क्योंकि मेरे जिम्मे duty है :—

तेरा रूप है अद्भुत अचरज तेरी उत्तम देही।
शग कल्याण जगत् में आया, परम दयाल स्नेही।

इस लिए मैंने संसार के कल्याण के ख्याल से इस भेद को जिसको सबने संकेत में ब्यान किया, मैंने इस को जगत् कल्याण के ख्याल से ब्यान कर दिया ताकि जो बुद्धिमान् व्यक्ति हैं वे बात को समझ जायें तथा अपनी दुनिया क्रियात्मक बनायें और धार्मिक पक्षपात में आपस में न आयें। देखो न ! हिन्दू मुसलमानों के क्या झगड़े हो रहे हैं, क्या हो रहा है !

अपनी निशिश्त रखना तुम आत्मा पर हरदम,
आत्मस्वरूप रह कर संसार में विचरना ।

आत्मस्वरूप क्या है ? लोग आत्मा-२ शब्द कहते रहते हैं । आत्मा है तुम्हारा प्रकाश, तुम्हारे अन्तर जब तुम प्रकाश में जाते हो उस समय तुम आत्मस्वरूप हो इस लिए सनातन धर्म में गायत्री मन्त्र में भी यही है :—

ओम् भूर् भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यम् ।

राधास्वामी मत में ज्योतिःस्वरूप फिर ओंकार, शरभंकार, फिर सत्य है सनातनधर्म तथा राधास्वामीमत में कोई अन्तर नहीं । प्रकाश का उपदेश हर धर्म में है, प्रकाश को सब मानते हैं । हज़रत मूसा कोहतूर पर गये थे । उन्होंने वहां देखा कि प्रकाश का पहाड़ है वह उन्होंने अपने अन्तर देखा । यह नहीं कि बाहर कोई नूर का पहाड़ था, वह उनके अपने अन्तर का ही था, इसलिए सनातनधर्म और सन्तमत में बार2 कहा जाता है कि अपने अन्तर साधन करके प्रकाश को पकड़ो । परन्तु नूर का साधन प्रत्येक व्यक्ति नहीं कर सकता । क्यों नहीं कर सकता ? क्योंकि उसके मन में शुद्धता नहीं है । इस लिए मैंने यह सोचा कि लोगों को आध्यात्मिकता की ओर ले जाने की बजाय पहले उनको इस field में बनाऊँ कि वे अपने मन को

शुद्ध कर सकें। जब मन शुद्ध हो जायेगा फिर अपने आप ही जब वह अन्तर जायेंगे उनको प्रकाश हो जायेगा, यह है सारा खेल और यही बात कबीर साहिब ने कही है :—

अब मैं भूला रे भाई, मेरे सतगुरु जुगत लखाई।
किरिया कर्म आचार मैं छांडा.छांडा तिरथ का नहाना।
सगरी दुनिया भई सयानी, मैं ही इक बौराना।

कबीर साहिब कहते हैं मैंने तीर्थ का नहाना व कर्मकाण्ड छोड़ दिया। क्यों ? तीर्थ जाओगे तो क्या बन जायेगा ? धक्के खाते जाओगे, असली वस्तु तो यह मन है इसको सम्भालना है। गुरु नानक साहिब की वाणी है कि "कौड़ी तूमड़ी गई हरिद्वार में नहाने के लिए, मुड़ के आई कौड़ी'। इस लिए सब से जरूरी बात मैंने यह सोची है कि पहले इन्सान को यह बताया जाये कि तूने अपने जीवन को शुरू कैसे करना है। तीर्थ करो या न करो क्या हुआ ! पिछले समय में तीर्थ इस लिए जाते थे कि वहां जो साधु, महात्मा होते थे उनसे वे ज्ञान लेकर आते थे तथा कुछ संगठन का भी एक मार्ग था :—

ना मैं जानू सेव बंदगी, ना मैं घंट बजाई।
ना मैं मूरत धरी सिंघासन, मैं पुहुप चढ़ाई।।

एक व्यक्ति मन्दिर में जाकर घंटी बजाता है, शिवों को पानी दे आता है, सारा दिन उसका मन काबू में नहीं है तो उसको क्या लाभ? क्या बन जायेगा?

जो यह मूरत मुख से बोलै, कर असनान न्हवाई।
पांच टका हौं देत ठठेरे, एकहि हौं लै आई ॥
ना हरि रीझै जप तप कीन्हें, ना काया के जारे।
ना हरि रीझै धोती छाड़े, ना पाँचों के मारे ॥
दाया राखि धरम को पालै, जग से रहै उदासी।
अपना सा जिव सब का जानै, ताहि मिलै अविनासी ॥
सहै कुसबद बाद को त्यागै, छाड़ै गर्ब गुमाना।
सत्तनाम ताही को मिलि है, कहै कबीर सुजाना ॥

प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्त्तव्य को पूरा करना चाहिए। मैं उज्जैन में कुम्भ पर गया वहां सत्संग था तो वहां कई व्यक्ति एक साधु के शिष्य बनने के लिए आये थे। मैंने सत्संग में इसी शब्द पर बोला और कहा कि भई! तुम अपनी जवान स्त्रियों को व माँ बाप को छोड़ कर आ गये तुम को कुछ नहीं मिलेगा। अपनी duty पूरी करो, अपना फर्ज पूरा

करो फ़र्ज़ ! तथा दया करो, तब तुमको लाभ होगा। तुम दया करते हो, तुम्हारे बच्चे होते हैं वे निर्दोष होते हैं तुम उनको थप्पड़ मारते हो,घरों में कटु बचन बोलते हो। कबीर साहिब के कहने के अनुसार जो व्यक्ति दया करता है तथा अपनी duty पूरी करता है उसे अविनाशी मिलता है। मुझे खुशी है कि मैंने अपने जीवन में सारे फ़र्जों को पूरा किया, मैंने अपने बाप की बड़ी सेवा की। लोग उस बाप की सेवा करते हैं जिससे पैसा लेना होता है। मेरा बाप तो सिपाही था, उसको 10/- पैन्शन मिलती थी, उसके पास क्या था ! मैंने उनको इस तरह से पाला जिस तरह मां बच्चे को पालती है। Duty towards wife, duty towards Children, duty towards Guru, duty towards you Satsangies. आप लोग आते हैं क्या मैं अपनी duty पूरी नहीं करता ? जब मैं गुरु बन कर यहां सत्संग देता हूं गुरु का अर्थ है ज्ञान, मैं आप लोगों को सच्चा ज्ञान दे जाता हूं, अपनी duty पूरी किये जाता हूं। तुम मेरी क़दर करो या न करो इसकी मैं क्या परवाह करता हूं :—

दाया राखि धरम को पालै, जग से रहै उदासी,
अपना सा जिव को जानै, ताहि मिलै अविनाशी।

अपने जैसा दूसरों को समझो। वह सलूक दूसरों के साथ मत करो जो तुम चाहते हो कि तुम्हारे साथ कोई न करे। यह है नियम जो ऐसा करता है उसे अविनाशी पद मिलता है, उसको ज्ञान होता है। जो ऐसा नहीं करता वो लाख सिर पटक कर मर जाये उसको कुछ नहीं मिलता :—

सहै कुसवद बाद को त्यागै, छाड़ै गर्ब गुमाना।
सत्तनाम ताही को मिलि है, कहै कबीर सुजाना॥

दूसरा व्यक्ति कोई तुमको कठोर शब्द कहता है जो उसको सहन कर जाता है वही सच्चा साधु है। बाद कहते हैं मैं-मैं तू-तू करने को, नहले पर दहला मारने को। कबीर साहिब कहते हैं कि जब तक यह है ज्ञान नहीं मिलता। मैंने मान नहीं रखा कितनी २ क़समें खाकर सच्चाई कहता हूं कि मैं कहीं नहीं जाता। ये जितने महात्मा, जो गुज़र गये हैं या

अब मौजूद हैं जिन्होंने Public को सच्ची बात नहीं बताई और अपने मान को रखा, कबीर साहिब के कहने के अनुसार उनको सत्तनाम कहाँ से मिला ? कबीर साहिब यही कहते हैं न कि जब तक तुम अपना मान-गुमान नहीं छोड़ोगे तुमको सत्तनाम नहीं मिलेगा। तो यदि मैं अपने मान व इज्ज़त के लिए आप लोगों को भेद नहीं बताता और इस गरज़ से कि आप मत्थे टेकते रहो, मुझे पैसे देते रहो, मुझे फूल चढ़ाते रहो तुम को सच्चाई नहीं बताता तो कबीर साहिब के कहने के अनुसार मुझे सत्तनाम कहां से मिलेगा, बताओ ? मुझे सत्तनाम का पता कैसे लगा ? केवल मन का रूप समझ में आने व मन को छोड़ जाने से। जब से मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर जितने भी विचार व ख्यालात उठते हैं सब माया हैं, Suggestions & Impressions हैं तो मैं इस मन को छोड़ कर आगे अपने घर जाने के लिए विवश हो गया। आगे क्या है ? आगे प्रकाश है और स्वत: शब्द है, वही सत्तनाम है। मैंने आपको समझाने में कोई कसर नही छोडी। शेष, महात्मा पृथ्वी नाथ जी यहां हैं मैंने उनके घर का

खाया नहीं, न मैं पृथ्वी नाथ की ग़लत तरीके से [illegible] इसमें सच्चाई है, सच्चा [illegible] है और स्वामी जी इनको अपनी जगह दे गये हैं मैं चाहता हूं कि आप लोग इनको संगति से लाभ उठायें। शेष, यह है कि दाता दयाल Kashmir Lodge (कश्मीर लौज) बनाने के लिए कह गये थे, इसमें केवल सत्संगियों ही का काम नहीं है मुसलमानों को भी शामिल करो और जो पन्थाई हैं उनको भी शामिल करो, Kashmir Lodge (कश्मीर लौज) बनाने की कोशिश करो और मैं यदि जीवित रहा तो मैं आ जाऊंगा। उद्घाटन कर जाऊंगा, इन्सान बनो का झंडा यहां गाढ़ जाऊंगा। न हिन्दू, न मुसलमान, न सिक्ख, न ईसाई, इन्सानियत पर सत्संग कराओ।

तो आज मैंने आपको सब कुछ कह दिया जो कुछ मेरे पास था, कसर नहीं छोडी। सब को राधास्वामी !

—o—o—

सत्संग परम सन्त मानव दयाल जी महाराज, मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 13-4-82

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्व.
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ।
मस्तरामसुतं देवं फ़कीरचन्दं पण्डितम् ।
परमसन्तं दयालं च फ़कीरं वन्दे जगद्गुरुम् ।
मानवर्धमस्य धातारं दाता दयालस्य प्रियतमम्।
सन्तधर्मस्य गोप्तारं वन्दे फ़कीरं जगद्गुरुम् ।

गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु ही विष्णु, हैं,गुरु हो महेश्वर और गुरु ही तीनों से परे हैं, परब्रह्म, परमत्त्व हैं । मस्तराम जी के घर में उत्पन्न होने वाले परमतत्त्व के अवतार पण्डित फ़कीर चन्द जी महाराज, जो परम सन्त परम दयाल हैं उनको नमस्कार है । वो परम

दयाल जो मानव धर्म (आज मानवता का झण्डा लहराया गया) के आधार, जो दाता दयाल जा के सबसे प्रिय हैं और जो सन्तमत की रक्षा करने वाले हैं ऐसे परम सन्त परम दयाल जी को नमस्कार है।

राजों के महाराज, तुम मेरे सतगुरु स्वामी ॥
हित अनहित सब के हितकारी, प्रगटे जन के काज तुम ॥
परमारथ के कारन आये, साज के सन्त समाज तुम ॥
दुःखियों का मेटो दुःख दारुन, रखलो उनकी लाज तुम ॥
ज्ञानी ध्यानी ऋषि मुनि देवा, सबके हो सिरताज तुम ॥
राधास्वामी परम दयाला चरन शरन दो आज तुम ॥

यह शब्द जो पढ़ा गया है आज के लिए बिलकुल सही तथा मुआफ़िक है। आज हम परम दयाल जी की शारीरिक अनुपस्थिति में पहली बार बैसाखी का उत्सव मना रहे हैं। बैसाखी, जिसे पंजाबी में बिसाखी या बसाखी कहते हैं। इस शब्द का अर्थ जो मैं समझता हूं वो यह है कि यह बै+ साक्षी दो शब्दों से बना है, वै का अर्थ है परलोक या बैकुण्ठ अर्थात् शरीर और

मन से जो परे है और साक्षी का अर्थ सर्व सन्तमत का सार है। जैसे सन्त कबीर की साखी अर्थात् कबीर साहिब का लिखा हुआ सन्तमत का सार।

परम दयाल जी विशेषत: बैसाखी को सब से अधिक महत्व देते थे। मुझे याद है कि पिछली बार उन्होंने मुझे कम से कम दस पत्र लिखे कि इस बैसाखी पर अवश्य आना, अवश्य आना। कई तो ऐसे पत्र हैं जिनको पढ़ कर रोना आता है। मुझे लिखा कि इस बार अवश्य आओ, मैं चाहता हूं कि तुमको सब सत्संगियों से मिला दूं क्योंकि मेरा भरोसा नहीं है। बहुत से ऐसे संकेत देकर मुझे पिछली बैसाखी पर अमेरिका से बुलाया था। बैसाखी को महत्त्व देने का अर्थ क्या है? साक्षी शब्द को समझना। आज जो शब्द पढ़ा गया है इस शब्द में भी उसकी तरफ इशारा है। साक्षी या द्रष्टा को आप समझ जायें तो आप परम सन्त हो जायेंगे। साक्षी क्या है? हमारे अन्दर् में जो परमतत्त्व है वो ही साक्षी है। परमतत्त्व या साक्षी का अनुभव हो जाये तो ही मानव को समझ आती है कि असल में

मैं क्या हूं और कौन हूं, मनुष्यत्व या मानवता क्या है और मानव का क्या अर्थ है यदि। मनुष्य जिसे हम मनुष्य बनो कह रहे हैं यह समझ ले तो दुनिया में किसी प्रकार की अशान्ति, किसी प्रकार का द्वेष, रार, घृणा या नफ़रत कुछ न रहे, सत्संगों का मतलब इसी बात का विवेक, समझ, आन्तरिक ज्ञान हो जाना है, इसी को आँखें खुल जाना भी कहते हैं मलिक साहिब! आप ने मुझे लिखा था कि परम दयाल जी ने आपको कहा था कि मेरा साहित्य पढ़ने से तेरी आँखें खुल जायेंगी। इस का मतलब यह है कि आपको समझ आ जायेगी कि आप क्या हैं अर्थात् आपकी असलियत क्या है। मैं कोशिश करूंगा कि थोड़े से तथा सीधे-सादे सरल शब्दों में इससे सम्बन्धित अपना विचार व अपना अनुभव आपके सामने रखूं।

साक्षी बड़ा मार्मिक व गूढ़ रहस्य वाला शब्द है। इस साक्षी पर हज़ारों ग्रन्थ लिखे हुए हैं और इस साक्षी को समझने के लिए उपनिषदों के ऋषियों व महर्षियों ने हजारों वर्ष लगा दिये कि

मासिक सन्देश

गुरु तारेंगे हम जानी।
तू सुरत काहे बोहरानी॥

मेरे प्यारे सत्संगियो !

राधास्वामी, परम दयाल जी सहाई।

स्वामी जी महाराज का ऊपर दिया गया शब्द बहुत ही गहरा मतलब रखता है। गुरु कौन है और क्या है ? 'गु' का मतलब है अन्धेरा और 'रु' का मतलब है हटाने वाला। जो चीज, तत्त्व या व्यक्ति हमारे ज्ञान के अन्धेरे को मिटा कर ज्ञान का प्रकाश देता है, वही गुरु है। इस लिए सन्तमत में उस गुरु की महिमा है, जो सत्संग दे कर जीवों के अज्ञान को मिटाता है। गुरु का दूसरा मतलब वह मालिके कुल, सर्वाधार परम तत्त्व है, जो सब नामों से परे है और जिसे राधास्वामी दयाल भी कहा गया है। गुरु का साधारण अर्थ होता है बड़ा। क्योंकि सर्वाधार

परम तत्त्व सबसे न्यारा है, सब से बड़ा है और उसकी एक बूंद से ही सब लोक-लोकान्तर बने हैं, इस लिए वही असली और सच्चा गुरु है। यह परम तत्त्व सब के अन्दर है, इस लिए परम दयाल जी महाराज सत्संगियों के माथे के बीच तीसरे तिल पर उंगली लगा कर कहा करते थे। 'गुरु यहाँ है' 'गुरु यहाँ है'।

जब कामिल गुरु मिल जाता है, उसकी आज्ञा का पालन करने से यह पूरा यक़ीन हो जाता है कि वह परम तत्त्व, जो अविनाशी है हमें सभी मुसीबतों को पार करने में पूरी सहायता देगा ऐसा यक़ीन हो सच्चे गुरु के द्वारा दिया गया अभयदान है। वे सभी लोग धन्य हैं, जिन्होंने सर्वाधार, परम तत्त्व परम दयाल जी महाराज के दर्शन किये हैं और उनके सत्संगों के ज़रिए ऊपर दिये गये शब्द को समझा है।

ज्यों-२ मैं अपने परम गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए उनके ज़रिए सौंपी गई ज़िम्मेवारी को निभाने के लिए आगे बढ़ रहा हूं स्वामी जी का यह शब्द दिनोंदिन मेरे मन में घर करता जा रहा

है और मेरा यक़ीन निजो अनुभव बनता जा रहा है यदि मनुष्य इस सत्य को गहराई से जान ले कि गुरु ही हमें सब जगह उभारता और तारता है तो वह सहज जीवन बिताते हुए सब काम मौज पर हो छोड़ देगा। दूसरे शब्दों में, गुरु के वचनों पर चलने से मौज खुद ही आपके सब काम करती है, इसमें ज़रा भी शक की बात नहीं है।

जब से मैं अप्रैल के महीने में अपने परम गुरु को आज्ञा का पालन करने के लिए स्थायी रूप से होशियार-पुर में आया हूं हर दिन, हर घड़ी और हर काम में मालिके कुल की मौज ही काम कर रही है। आज तक मैंने जितने भी सत्संग होशियारपुर व होशियारपुर से बाहर दिये हैं वे सब मौज के अधीन दिये है। मन्दिर में इतनी शान्ति और आनन्द का वातावरण है कि होशियारपुर को एक दिन के लिए भी छोड़ने का मन ही नहीं करता। मैंने यह सोचा है कि जून के पूरे महीने में सत्संगों का सिलसिला होशियारपुर में ही रहेगा और मैं बाहर नहीं जाऊंगा। जुलाई

मैं कुछ उन केन्द्रों में सत्संग देने का प्रोग्राम बनाया जायेगा जो नज़दीक हैं। बाकी केन्द्रों में दशहरे से पहले और पीछे और बसन्त के पहले और पीछे आप उसी तरह दौरा करेंगे जैसे मेरे परम गुरु किया करते थे। इस लिए सभी सत्संगियों से यह प्रार्थना है कि वे धीरज से काम लें और मेरे प्रोग्राम की इन्तज़ार करें।

मैं यह बात इस लिए लिख रहा हूं क्योंकि मुझे अहसास है कि सभी केन्द्र मेरे सत्संग का बेताबी से इन्तज़ार कर रहे हैं जैसा कि मुझे मेरे अभी-2 के दौरे से पता चला है। मैं सोलह मई को होशियारपुर से रवाना हुआ था और 17 और 18 मई को आर 850 न्यू रजिन्दर नगर न्यू दिल्ली में रहा। हांलांकि यहां पर मेरा कोई सत्संग का प्रोग्राम नहीं था फिर भी देहली के प्रेमी सत्संगी मेरे पास आये और बातों-2 में सच्चा सत्संग हो गया। बहुत से सत्संगियों ने देहली में दिये गये 3 जनवरी वाले सत्संग की बहुत याद दोहराई। एक कालेज की छात्रा ने यह कहा, "जब मैं 3 जनवरी को अपनी मां के साथ आपका सत्संग सुनने सलवान स्कूल में

दाख़ल हुई तो मैंने मां से कहा कि यह परम दयाल जी के पुराने सत्संग का रिकार्ड बज रहा है। किन्तु जब मैं हाल में पहुंची तो आपको देख कर दग रह गई।" यह मेरे परम गुरु के विचारों की रेडीएशन का और सत्संगियों के विश्वास का फल है कि मेरे सत्संग सहज ही हो रहे हैं।

विलारी में तो कमाल हो हो गया। यहां पर तीन सत्संग विलारी के मानवता मन्दिर में और दो सत्संग वकील साहब शर्मा जी और उनकी पत्नी श्रीमती सावित्री देवी के घर हुए और इसके इलावा एक सत्संग मिल के मन्दिर में हुआ। इन सभी सत्संगों पर सत्संगियों की संख्या बहुत काफ़ी थी। मानवता मन्दिर में तो दूसरे और तीसरे दिन भवन के बाहर भी भीड़ थी। सत्संगियों का प्रेम उसका तो मैं वर्णन ही नहीं कर सकता। ऐसा ही अनुभव बनवारीपुर, अहमदपुर, मोदीनगर, सरसोंहेरी और सहारनपुर के सत्संगों में हुआ। मैं सभी केन्द्रों के सत्संगियों को विश्वास दिलाता हूं कि ठीक समय पर मैं सत्संग देने के लिए आऊंगा।

इस सन्देश में मैं एक बात पर खास जोर देना चाहूंगा। पांच और छः जुलाई को मानवता मन्दिर होशियारपुर में परम दयाल जी के चोला छोड़ने के बाद पहला बार गुरु पूर्णिमा का उत्सव मनाया जा रहा है। गुरु पूर्णिमा ही का एक ऐसा अवसर है, जब हम अपने गुरु की पूजा कर सकते हैं। परम तत्व के अवतार परम दयाल जी महाराज साधारण गुरु नहीं थे। वह मनुष्य के चोले में साक्षात् परम तत्व थे और अब भी उनकी मौजूदगी महसूस होती है। ऐसे परम गुरु को गुरु पूर्णिमा पर श्रद्धांञ्जलि देना एक सौभाग्य है। इस लिए मैं सभी सत्संगियों से आशा रखता हूं कि वे इस अवसर पर मानवता मन्दिर होशियारपुर में आने की पूरी कोशिश करेंगे। इस मौके पर अमेरिका के एक आचार्य और कुछ सत्संगी भी आ रहे हैं। उस समय तक परम दयाल जी की समाधि भी बन चुकी होगी और सिद्ध सन्त पुरुष फ़कीर बाबा की पुस्तक आत्मा राम एण्ड सन्ज़ देहली से प्रकाशित हो कर मानवता मन्दिर में आ चुकी होगी।

मैंने यह सब कुछ आपको प्रेरणा देने के लिए

इस लिए लिखा है कि आप सही रूप से गुरु के रूप को समझ सकें और आपको गुरु की दया का अन्दरूनी अनुभव हो जाय। गुरु पूर्णिमा पर जो सत्संग होंगे उनसे भी आपको यह पता चल जायेगा कि निम्न प्रकार मानवता के सीधे और सच्चे रास्ते पर चल कर आप सच्ची खुशी और मन की शान्ति पा सकते हैं और मन की शुद्धि के बाद किस प्रकार सुरत शब्द योग को अपना कर रूहानियत में आगे बढ़ सकते हैं। राधास्वामी नाम की महिमा पर लिखने के लिए तो काफी समय चाहिए। मैं इस विषय पर फिर लिखूंगा बहुत से सत्संगियों के बार-2 के अनुरोध पर मैं राधास्वामी कीर्तन की कविता नीचे दे रहा हूं। इसके पाठ करने से आपकी आत्मशुद्धि होगी और मन को शान्ति मिलेगी।

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
अलख अगम और अनामी,
राधास्वामी, राधास्वामी राधास्वामी।
परम सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया।
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धर पद धामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।

बन कर आये परम फ़कीर, हरने सब लोगों की पीर।
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
राम भी हो और कृष्ण भी तुम,
तुम महावीर और बुद्ध गौतम।
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम सब नामों में अनामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
मानवता का किया प्रचार निज अनुभव का दे दिया सार।
ऐसे गुरु को बारम्बार नमामी नमामी नमामी।
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी।
दाता दयाल के प्यारे तुम, मानव के रखवाले तुम।
निर्गुण और सगुण भी तुम सब के अन्तर्यामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।

पत्र लिखने वाले बहुत से सत्संगियों को मैं पत्र के उत्तर इस लिए नहीं लिखवा सका क्योंकि मैं दो हफ़्ते से बाहर दौरे पर था इस लिए में उनसे क्षमा चाहता हूं। मैं कोशिश करके धीरे-२ सब के उत्तर लिखवा दूंगा। सब सत्संगियों को हमेशा की तरह इस महीने भी शुभ भावना भेजता हूं और मालिके कुल से मेरी प्रार्थना है कि वह आप सब को धन, मान, स्वास्थ्य और शान्ति दें। सब को मेरा राधास्वामी!

सदा आपका फ़कीरमय
मानव

मानवता ध्वज

मानव धर्म के झण्डे ऊँचे उड़ो हवा में,
ऊँचा न तुम से हो ले कोई दूसरा ख़ला में।
तुझ को अज़ल से हमराह बाबा फ़कीर लाया,
टकरा के हर बला से ऊँचा तुझे उठाया।
नफ़रत की आंधियों में खतरात की घटा में,
मानव धर्म के झण्डे ऊँचे उड़ो हवा में।
सब मज़हबों से बेहतर इन्सानियत का मज़हब,
ये दीने आदमियत यकसानियत का मज़हब।
खुशबूये आदमियत महका करे फज़ा में,
मानव धर्म के झण्डे ऊँचे उड़ो हवा में।
पहुँचा दो सन्देशा इन्सान जहाँ जहाँ है,
लमहाते आजमाइश हैं वक्ते इमतिहां हैं।
पाँव ना डगमगाये इन्सानियत की राह में,
मानव धर्म के झण्डे ऊँचे उड़ो हवा में।
इन्सान है वही जो इन्सान के काम आये,
सब से मिले किसी का लेकिन ना दिल दुःखाये।
शाकर रहे व हर पल राज़ी रहे रजा में,
मानव धर्म के झण्डे ऊँचे उड़ो हवा में।
इक नूर की उपज है दरवेश कुल जमाना,
अपने ही अपने सब हैं कोई नहीं बेगाना।
सारे है भाई भाई हम खानाये खुदा में,
मानव धर्म के झण्डे ऊँचे उड़ो हवा में।

(लेखक : दरवेश जालन्धरी)

आया था फ़कीर

1. देख कर जग को दुःखी दुनिया में आया था फ़कीर,
नाम का सागर असीम इक साथ लाया था फ़कीर।
2. आज की मरती हुई इन्सानियत के वास्ते,
जिन्दगी का इक नया पैग़ाम लाया था फ़कीर।
3. नफ़रतों की आग से जलते हुए इस दौर में,
प्यार का भर कर अनोखा जाम लाया था फ़कीर।
4. यूँ तो सन्तों की ज़माने में कमी कोई नहीं,
जगत वालों ने बड़ी मुशकिल से पाया था फ़कीर।
5. यूँ तो पथ दर्शक जमाने भर में गुजरे हैं अनेक,
खुल के राजे राहे हक़ जिस ने बताया फ़कीर।
6. धर से बेघर भटकते भूले हुए इन्सान को,
घर के अन्दर और घर जिसने दिखाया था फ़कीर।
7. शरण को आये हुए हर जीव को,
जिसने ऐ दरवेश सीने से लगाया था फ़कीर।

लेखक : दरवेश जालन्धरी

शहनशाह से कम नहीं

1. वेज़र हूं दिल ज़रूर शाहनसाह से कम नहीं,
   चिन्ता नहीं भविष्य की माज़ी का ग़म नहीं।
2. आने की अब खुशी नहीं जाने का ग़म नहीं,
   दिल में नहीं कुछ खेद बिलकुल चश्म नम नहीं।
3. दुनिया के काम काज तो होते ही कम नहीं,
   होते रहेंगे यूँहीं मगर होंगे हम नहीं।
4. सफरे तबील तर तेरा वन्दे खत्म नहीं,
   मंजिल तेरी है दूर ये दैयरो हरम नहीं।
5. खुशियों से हूं ना आशना इलमे अलम नहीं,
   अब दुनिया समझ ले हमें ग़म है के ग़म नहीं।
6. कावे हज़ार कर दूं दरे पीर पर निसार,
   मुरशिद का संगे दर दरे जन्नत से कम नहीं।
7. कूचाये इश्क़ सिदक़ में दो ना समा सकें,
   हम थे तो वो नहीं था अब वो है तो हम नहीं।
8. कुरवत किसी फ़कीर की क्यों कर मिले उसे,
   किस्मत में जिसके सोहबते फुकरा रक़म नहीं।
9. हक से वसाल जाने मन समभव नहीं कभी,
   जब तक किसी दरवेश से एहो रसम नहीं।

लेखक : दरवेश जालन्धरा

शोक समाचार

बड़े खेद के साथ सब सज्जनों को सूचित किया जाता है कि महात्मा भूप सिंह (गरीब दास) जी की धर्मपत्नी श्रीमती कस्तूरी देवी जी 7. 5. 1982 को प्रातः काल अपना पांचभौतिक शरीर छोड़ कर हमेशा के लिए परमधाम पधार गई हैं। वो हजूर परम दयाल जो महाराज की परम अनुयायी थीं। भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दे।

मानवता मन्दिर का सारा परिवार और ट्रस्ट के सभी सदस्य इन के देह त्यागने पर श्रद्धाञ्जलि सहित शोक प्रकट करता है और कुटुम्ब से सहानुभूति प्रकट करता है।

सैक्रेटरी

मेहरबां मानव दयाल

लेखक :— दरवेश जालन्धरी

1 गुलशने रूहानियत का बाग़वां मानव दयाल,
सन्त सत्तगुरु वक्त पूर्ण वेगुमां मानव दयाल।

2 काफलां सालार मीरे क़ारवाँ मानव दयाल,
रहबरे राहे हक़ीक़त राज़दां मानव दयाल।

3 दाद के काबिल है मुराशिद की निगाहे इन्तखाब,
मुल्क अमरीका में जा ढूंढ़ा कहाँ मानव दयाल।

4 आलिमो फाज़िल भी है आमिल भी है कामिल भी है,
वाकिफे इसरारे हक़ भी मेहरबां मानव दयाल।

5 पै करे हक़ो सदाक़त चश्मा ए मिहरां अता,
मखज़ने अनवार शाहे आरिफ़ाँ मानव दयाल।

6 मेहर की मूरत मनोहर, सरवसर रहमो करम,
फैज़ से भरपूर बहरे बेकराँ मानव दयाल।

7 हक़ रसा दरवेश हक़ गो हक़ नवा,
रहनुमाए राहे हक़ पीरे जहाँ मानव दयाल।

सत्संगियों के लिए ज़रूरी सूचनाएं

सभी महानुभावों से प्रार्थना है कि :—

1. मानवता मन्दिर सम्बन्धी पत्र व्यवहार सैक्रेटरी, मानवता मन्दिर से करें व्यक्तिगत नाम से नहीं।
2. डा. के. एल. जोड़ा अब मानवता मन्दिर के जनरल सैक्रेटरी पद पर नहीं रहे इस लिए उन के नाम से कोई पत्र व्यवहार न करें।
3. जिन्होंने अपने अभ्यास या रूहानी उन्नति के बारे में अपनी शंकाओं को दूर करना हो वे हजूर मानव दयाल पण्डित ईश्वर चन्द्र जी महाराज के नाम से पत्र व्यवहार करें।
4. मनीआर्डर, ड्राफ्ट्स्, चेक वग़ैरह सब सैक्रेटरी फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेवल ट्रस्ट के नाम से भेजने की कृपा करें।

प्रेजिडेण्ट

—o-☺-o—

सभी सत्संगियों को सूचित किया जाता है कि इस वर्ष 5-6 जुलाई 1982 को गुरु-पूर्णिमा का उत्सव विशेष रूप से मनाया जायेगा। क्योंकि परमतत्त्व अवतार मालिके कुल परम सन्त परम दयाल पण्डित फ़कीर चन्द जी महाराज की महासमाधि के बाद यह पहली व्यास पूर्णिमा है। इस लिए इस अवसर पर सभी आचार्य, विद्वान् और श्रद्धालु अपने अनुभवों को बतायेंगे और परम दयाल जी महाराज के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि देंगे। 5 जुलाई को एक विचार गोष्ठी भी होगी जिसमें अमेरिका के आचार्य और कुछ भारत के विद्वान् भी इस बात पर प्रकाश डालेंगे कि सन्तमत किस प्रकार सभी धर्मों को परस्पर सहयोग से चलने में सहायता दे सकता है।

सैक्रेटरी

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ। 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ। 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ। 7. ਨਾਮ ਦਾਨ।

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans. 2. A Word to Canadians.
3. Manavta the true religion.
4. Religious Research. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth.
8. Science of God Realization.
9. Realization of Reality. 10. JeewanMukti.
11. Art of happy living. 12. Key to Freedom.
13. Broadcast of Reality in America.
14. Yogic Philosophy of Saints.
15. Nam Dan. 16. Autobiography of Faqir.
17. Republic day Message 26-1-81. 18. Radha Swami Dayal's Divine Message on Self Realization.

हिन्दी भाषा में पुस्तकें

1. अनुभवसार। 2. सन्तमत लेखमाला भाग 1
3. सन्तमत लेखमाला भाग 2

—o:o—

वन्दनम्

चरण शरण की बन्दना, नित कोइ और न काम।
गुरु बसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम॥

तेरी शरणागत हुआ फिर, किसकी राखूं आस।
आस बो तेरी दया की, जग से रहूं उदास॥

रूप ध्याऊं, नाम गाऊं, शब्द राता मन।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन॥

सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय॥

मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग॥

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
20-6-82 को होगा।

Regd. No. 2626574 JUNE 10th 1982
MANAV MANDIR NWHSP—7

ADDRESS

To

1283 Sh. A. Hanmanth Rao
H. No. 10-3-194/8
Humayun Nagar
Hyderabad 500028 A.P.

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022

Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)